भगवान् शिव की स्तुतियाँ

अब भगवान् शिव की कुछ बहुप्रचलित स्तुतियाँ हिन्दी भाषा में दी जा रही हैं ताकि जिन्हें संस्कृत भाषा का अभ्यास न हो, वे भी लाभ उठा सकें।

धन–धन भोले नाथ

धन–धन भोलेनाथ बांट दिये तीन लोक एक पल भर में,
ऐसे दीनदयाल हो दाता, कौड़ी नहीं रक्खी घर में।
प्रथम दिया ब्रह्मा को वेद वो बना वेद का अधिकारी,
विष्णु को दे दिया चक्र सुदर्शन लक्ष्मी सी सुन्दर नारी।
इन्द्र को दे दी कामधेनु और ऐरावत सा बलकारी,
कुबेर को सारी वसुधा का कर दिया तुमने भण्डारी।
अपने पास पात्र नहीं रक्खा था केवल खप्पर कर में,
ऐसे दीनदयाल हो दाता कौड़ी नहीं रक्खी घर में।
अमृत तो देवतों को दिया और आप हालाहल पान किया,
ब्रह्मज्ञान दे दिया उसे जिसने कुछ तुम्हारा ध्यान किया।
भागीरथ को गंगा दे दी सब जग ने स्नान किया,
बड़े–बड़े पापियों का तुमने एक पल में कल्याण किया।
आप नशे में चूर रहो और पियो भांग नित खप्पर में,
ऐसे दीनदयाल हो दाता कौड़ी नहीं रक्खी घर में।
रावण को लंका दे दी और बीस भुजा दस शीश दिये,
रामचन्द्र को धनुष–बाण और हनुमत को जगदीश दिये।
मनमोहन को मोहनी दे दी और मुकुट तुम ईश दिये,
मुक्ति हेतु काशी में वास भक्तों को बख्शीश दिये।
अपने तन पर वस्त्र न राखो मगन रहो बाघम्बर में,
ऐसे दीनदयाल हो दाता कौड़ी नहीं रक्खी घर में।
नारद को दई वीणा और गंर्धवों को राग दिया,
ब्राह्मण को दिया कर्मकाण्ड और संन्यासी को त्याग दिया।
देव–दानव सभी भक्तों को अपने लोक में वास दिया,
जिसपर तुम्हारी कृपा हुई उसको तुमने अनुराग दिया।

जिसने ध्याया उसी ने पाया महादेव तुम्हारे वर में,
ऐसे दीनदयाल हो दाता कौड़ी नहीं रक्खी घर में।

ॐ जय जगदीश हरे

ओऽम् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे।। ॐ।।
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।। ॐ।।
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ मैं जिसकी।। ॐ।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। ॐ।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता।। ॐ।।
तुम हो एक अगोचार, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय, मैं तुमको कुमति।। ॐ।।
दीनबंधु दुःख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।। ॐ।।
शम्भु देवा शंकर भोले, हर हर महादेवा।
पार बह्मा विष्णु, शंकर भोले कृपा करो देवा।।
सब दर छोड़ के आया हूँ मैं द्वारे तेरे,
स्वामी आया हूँ मैं द्वारे तेरे। चरणों की भक्ति मुझे दे दो,
शरण में अपनी मुझे ले लो, अवगुण बख्शो मेरे।। ॐ।।
लाख चौरासी के फेरे छुड़ाओ, काटो यम फंदा।
निस दिन गुरु मुझे राखो, अपने संग सदा।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा।। ॐ।।
तन मन धन सब कुछ, है स्वामी तेरा।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।। ॐ।।

जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे।। ॐ।।

श्रीशिव चालीसा

दोहा– **जै गणेश गिरिजा सुवन, मंगलमूल सुजान।**
कहत अयोध्यादास तुम, देहु अभय वरदान।।

जै गिरिजापति दीनदयाला। सदा करत संतन प्रतिपाला।।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके। कानन कुण्डल नागफनी के।।
अङ्ग गौर शिर गंग बहाये। मुण्डमाल तन छार लगाये।।
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे। छवि को देखि नाग मुनि मोहे।।
मैना मातु की हवे दुलारी। बाम अंग सोहत छवि भारी।।
कर त्रिशूल सोहत छवि न्यारी। करत सदा शत्रुन क्षयकारी।।
नंदीगणेश सोहैं तँह कैसे। सागर मध्य कमल हैं जैसे।।
कार्तिक स्वामी और गणराऊ। या छवि को कहि जात न काऊ।।
देवन जबहीं जाय पुकारा। तबहीं दुःख प्रभु आप निवारा।।
कियो उपद्रव तारक भारी। देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी।।
तुरत षडानन आप पठायउ। लव निमेष मंह मारि गिरायउ।।
आप जलंधर असुर संहारा। सुयश तुम्हार विदित संसारा।।
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई। सबहिं कृपा करि लीन्ह बचाई।।
किया तपहिं भागीरथ भारी। करी तपस्या सफल पुरारी।।
दानिन महं तुम सम कोउ नाहीं। सेवक स्तुति करत सदा हीं।।
वेद नाम महिमा तव गाई। अकथ अनादि भेद नहिं पाई।।
प्रगटी उदधि मंथन में ज्वाला। जरत सुरासुर भये विहाला।।
कीन्ह दया तहं करी सहाई। नीलकण्ठ तव नाम कहाई।।
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा। जीत के लंक विभीषण दीन्हा।।
सहस कमल में हो रहे धारी। कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी।।
एक कमल प्रभु राखेउ जोई। कमल नयन पूजन चहं सोई।।
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर। भये प्रसन्न दिए इच्छित वर।।
जय जय जय अनन्त अविनाशी। करत कृपा सबके घटवासी।।
दुष्ट सकल नित मोहि सतावैं। भ्रमत रहे मोहि चैन न आवै।।

त्राही त्राही मैं नाथ पुकारो। यही अवसर मोहि आन उबारौ।।
लै त्रिशूल शत्रुन को मारौ। सकंट से मोहि आनि उबारौ।।
माता पिता भ्राता सब होई। संकट में पूछत नहिं कोई।।
स्वामी एक है आस तुम्हारी। आय हरहु अब संकट भारी।।
धन निर्धन को देत सदा हीं। जो कोई जाँचे सो फल पाहीं।।
स्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी। क्षमहु नाथ अब चूक हमारी।।
शंकर हो संकट के नाशन। विघ्न विनाशन मंगल कारन।।
योगी यती मुनि ध्यान लगावैं। शारद नारद शीश नवावैं।।
नमो नमो जय नमः शिवाये। सुर ब्रह्मादिक पार न पाये।।
जो यह पाठ करे मन लाई। तापर होत हैं शम्भु सहाई।।
ऋनियाँ जो कोई हो अधिकारी। पाठ करै सो पावनहारी।।
पुत्रहीन कर इच्छा कोई। निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई।।
पण्डित त्रयोदशी को लावै। ध्यानपूर्वक होम करावै।।
त्रयोदशी व्रत करै हमेशा। तन नहिं ताके रहै क्लेशा।।
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे, शंकर सन्मुख पाठ सुनावै ।।
जन्म जन्म के पाप नशावै। अन्तवास शिवपुर में पावै।।
कहत अयोध्या आस तुम्हारी। जानि सकल दुःख हरहु हमारी।।

दोहा– **नित नेम करि प्रातः ही, जो पाठ करे चालीस।**
ताकी सब मनोकामना, पूर्ण करहिं जगदीश।।
मगसर छठि हेमंत ऋतु, संवत चौंसठ जान।
अस्तुति चालीसा शिवहिं, पूर्ण कीन कल्याण।।

श्रीशंकर शतनामावली

जय महादेव देवाधिदेव, भोले शंकर शिव सुखराशी।
जय रामेश्वर जय सोमेश्वर, जय घुश्मेश्वर जय कैलाशी।।
जय गंगाधर त्रिशूलधर शशिधर, सर्वेश्वर जय अविनाशी।
जय विश्वात्मन विभु विश्वनाथ, जय उमानाथ काटो फांसी।।
सर्वव्यापी अन्तर्यामी शिव, रुद्र निरामय त्रयलोचन।
भवभयहारी जय त्रिपुरारी, जय मदनदहन जय दुःखमोचन।।
मृत्युंजय आशुतोष अघहर, जय बैजनाथ जय वृषध्वज।

जय लोकनाथ जय मन्मथारि, जय जय महेश जय मृड जय जय।।
जय गौरीपति जय चन्द्रमौलि, जय नीलकण्ठ जय अभयंकर।
त्रयताप हरो सब पाप हरो, हर हाथ जोड़ ठाढ़ो किंकर।।
कालहु के काल जय महाकाल, जय चण्डीश्वर जय सिद्धेश्वर।
जय योगेश्वर जय गोपेश्वर, जय निर्विकार जय नागेश्वर।।
जय ब्रह्मरूप ब्रह्मण्यदेव, जय धूर्जट अवढर दानी।।
जय घोरमन्यु जय ज्ञानात्मा, सबने ही आन तेरी मानी।
जय-जय सुरेश जय गिरिजापति, जय दिशाध्यक्ष जय दिग्वसनम्।
जय विरूपाक्ष कैवल्य-प्राप्त, निर्वाणरूप जय ईशानम्।।
व्यालोपवीति जय वामदेव, ओंकारेश्वर सब दुःख-हरनं।
हो प्रेमवश्य करुणामय प्रभु, नित भक्तों के आनन्द करनं।।
जय-जय कपर्दि जय स्थाणुं, जय नर्मदेश जय ब्रह्मचारी।
जय अमरनाथ जय सोमनाथ, जय शूलपाणि जय कामारि।।
बाघम्बरधारी रुण्डधारी, जय श्मशानवासी बाबा।।
मधुराति मधुर चण्डाति चण्ड, तेरा स्वरूप भोले बाबा।।
पशुपति सुरपति निर्वाणरूप, जय रवि शशि अनल नेत्रधारी।।
है शक्ति कहाँ जो गुण गावें, महिमा है तुम्हारी अति भारी।।
जय परमानन्द जय चिदानन्द, आनन्दकन्द जय दयाधाम।
दुनियां से सुनते आये हैं, भक्तों के सारे सभी काम।।
जय नन्दीश्वर जय प्रणतपाल, जय शम्भु सनातन हर हर हर।
पूर्ण समर्थ सर्वज्ञ सर्व, जय त्रिपुण्डधारी हर हर हर।।
कल्याणरूप और शान्तरूप, ताण्डव के हेतु हे डमरूधर।
हर पाप क्लेश और दोष सभी, त्रय ताप दया करके सब हर।।
शरणागत हैं प्रभु त्राहि-त्राहि, निज भक्ति देहु अरु करो अभय।
जो नाम जपै यह प्रेमसहित, उसको नहीं व्यापै कोई भय।।
तेरा नाममात्र ही जनम-जनम के, पाप भस्म कर देता है।
है धन्य भाग उस मानव के, जो इतने नाम नित लेता है।।
हाथ जोड़ विनती करूँ, क्षमा करो सब चूक।

लगी लगन ऐसी कछू, रह न सकौं मैं मूक।।
हमें भक्ति प्रभु दीजिये, अहो दया के धाम।
सीताराम, सीताराम, सीताराम, सीताराम।।

शिव – स्तोत्र

सदाशिव सदाशिव सकल दुःख हरो। मेरी बार क्यों देर इतनी करो।।
तुम हो प्रभु गणपति और गणेश। तुम ही काटते हो जगत के क्लेश।।
हुआ कष्ट से बहुत लाचार हूँ। मैं दुखिया खड़ा तेरे दरबार हूँ।।
मेरी भी अब नाथ रक्षा करो। सदाशिव सदाशिव सकल दुःख हरो।।
तू ही चन्द्र सूर्य तू ही प्रकाश। तू ही तारामण्डल ध्रुव आकाश।।
तू ही वायु अग्नि व पानी करो। तेरा नाम संकटहरण विश्वनाथ।।
पैदा पाल संहार सब तेरे हाथ। मुक्त मुक्तिदाता कृपा सार से।।
तुम अच्युत पुरुष आदि अविनाश हो। सौ ज्योति घट-घट में प्रकाश हो।
त्रिगुण शक्ति ब्रह्मा विष्णु ध्रुव। यह संसारसागर दुखों का समाज।।
तेरा नाम सागर में भारी जहाज। तेरा नाम लेकर कोटि पापी तरो।।
तू ही मत्स्य कूर्म वराह का स्वरूप। नृसिंह वामन परशुराम रूप।।
तु ही राम कृष्ण बुद्ध और काली हो। भगत हेतु अवतार लीला करो।।
तु शंकर विश्वम्भर महादेव जी। सभी देव दानव करें सेव जी।।
तेरी माया ने सब यह लीला करी। कर लाख चौरासी योनि धरी।।
सती का पिता दक्ष प्रजापति। की यज्ञ में उसने बेइज्जती।।
काटो शीश उस पर बकरा धरा। जो स्तुति की उससे तू हँस पड़ा।।
हिमालय ने जायी थी पुत्री अनूप। महामाया प्रगटी थी सती के स्वरूप।।
किया उसने ध्यान तुम्हारा हरी। तभी ले बराती जा गिरजा वरी।।
भण्डारी कुठारी किया यह हरी। जो भक्ति तुम्हारी करी थी कुँवर।।
जो रावण असुर तेरी पूजा करी। दसों शीश काटे चढ़ाई बली।।
खुश होकर उसको दिया था वरो। असुर राज्य लंका में जाकर करो।
रावण रघुवीर की सीता हरी। तभी हो दुःखी राम सेना करी।।
हनुमान हो उनकी रक्षा करी। तेरा नाम तब से रामेश्वर पड़ा।।
समन्दर मथन लागे दानव और देव। निकाल रत्न चौदह करें तेरी सेव।।
जो निकालो गरल देख भागे सुरो। गरल खाके खुद देव निर्भय करो।।

पुष्पदन्त था एक गन्धर्वराज। हुआ शाप उसको गया सब समाज।।
हो दीन उसने भी स्तुति करी। सब आफत उसकी तुमने हरी।।
हो के जर स्वामी हिमालयेश्वरो। जो जमीन वेश भीमा शंकरो।।
जो काशी पुरी लिङ्ग विश्वेश्वरो । नदी गोमती लिङ्ग त्रिबक्सरो।।
चारों युग ऋषीश्वर तपेश्वर मुनि । गुणगान करते न थकते सभी।।
मैं कलियुग का आजिज गुनहगार हूं । न काबिल कोई शिकवा कैसे कहूं।।
तू कैलाशवासी मैं आजिज जमीं। तू है जात आला मैं अदना तरीं।।
महादेव शंकर विश्वम्भर हरो । मेरे हाल पर रहम क्यों न करो।।
सदा शिव सदा शिव सकल दुःख हरो । मेरी बार क्यों इतनी देर करो।।

आरती शंकरजी की

आरती करो हरिहर की करो नटवर की, भोले शंकर की। टेक
महादेव जय शिव शंकर, जय गंगाधर जय डमरूधर
हे देवों के देव मिटा दो, विपदा घर-घर की ।।1।। (आरती०)
सिर पर शशि का मुकुट संवारे, तारों की पायल झंकारे।
धरती अम्बर डोले तांडव लीला से नटवर की ।।2।। (आरती०)
फणि का हार पहनने वाले, शम्भु है जग के रखवाले।
सकल चराचर डगमग नाचे, ऊंगली पर विषधर की ।।3।।(आरती०)
आरती करो हरिहर की करो नटवर की, भोले शंकर की।

जय गौरीशंकर उमापते

जय गौरी शंकर उमापते, कैलाशपते जय शिव जय शिव
जय महादेव जय चन्द्रमौलि,जय श्रीशंकर जय शिव जय शिव
जय मृत्युंजय जय भोलेश्वर,जय योगेश्वर जय शिव जय शिव
जय पार्वती पति परमेश्वर,जय कामारि जय शिव जय शिव
जय गंगाधर त्रिपुरारि विभो जय भवहारी जय शिव जय शिव
जय आशुतोष जय महाकाल कालहु के काल जय शिव जय शिव
जय ओंकारेश्वर रामेश्वर जय बैजनाथ जय शिव जय शिव
जय जय अविनाशी जय शम्भो जय विश्वनाथ जय शिव जय शिव
जय त्रिगुणातीत महेश्वर जय जय निर्विकार जय शिव जय शिव
सिर नाई कर जोरि विनती है स्वीकार करो जय शिव जय शिव

मम हृदय विराजो भक्ति देहु सब पाप हरो जय शिव जय शिव
मेटो चौरासी का चक्कर कर जन्म सफल जय शिव जय शिव
शरणागत हूं नाथ मैं, करो मेरी प्रतिपाल।
त्राहि-त्राहि अशरण शरण, शम्भो होहु दयाल।।

भगवान् कैलाशवासी

शीश गंग अर्धंग पार्वती, सदा विराजत कैलाशी।
नंदी भृंगी नृत्य करत हैं, धरत ध्यान सुर सुखराशी।।
शीतल मंद सुगंध पवन बहे, बैठे हैं शिव अविनाशी।
करत गान गंधर्व सप्त स्वर, राग रागिनी मधुरासी।।
यक्ष रक्ष भैरव जहं डोलत, बोलत है वन के वासी।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भ्रमर करत हैं गुंजासी।।
कल्पद्रुम और पारिजात तरु, लाग रहे हैं लक्षासी।
कामधेनु कोटिन जहं डोलत, करत दुग्ध की वर्षा सी।
सूर्यकान्त सम पर्वत शोभित,चन्द्रकांत सम हिमराशी।
नित्य छहों ऋतु रहत सुशोभित, सेवक सदा प्रकृति दासी।
ऋषि मुनि देव दनुज नित सेवत,गान करत श्रुति गुणराशी।
ब्रह्मा, विष्णु, निहारत निस दिन, कछु शिव हमको फरमासी।
ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर, नित सत् चित् आनन्द राशी।
जिनके सुमिरत ही कट जाती, कठिन काल-यम की फाँसी।
त्रिशूलधरजी का नाम निरन्तर, प्रेम सहित जो नर गासी।
दूर होय विपदा उस नर की, जन्म जन्म शिव पद पासी।
कैलाशी काशी के वासी, अविनाशी मेरी सुधि लीजो।
सेवक जान सदा चरनन को, अपना जान कृपा कीजो।
तुम तो प्रभुजी सदा दयामय, अवगुण मेरे सब ढकियो।
सब अपराध क्षमा कर शंकर, किंकर की विनती सुनियो।

श्रीशिवाष्टक

जय शिवशंकर, जय गंगाधर, करुणाकर करतार हरे,

जय कैलाशी, जय अविनाशी, सुखराशी, सुखसार हरे,
जय शशिशेखर, जय डमरूधर, जय जय प्रेमागार हरे,
जय त्रिपुरारी, जय मदहारी, अमित, अनन्त अपार हरे,
निर्गुण जय जय, सगुण अनामय, निराकर साकार हरे।
पार्वतीपति हर-हर शम्भो, पाहि-पाहि दातार हरे।।
जय रामेश्वर, जय नागेश्वर वैद्यनाथ, केदार हरे,
मल्लिकार्जुन, सोमनाथ जय, महाकाल ओंकार हरे,
त्रयम्बकेश्वर, जय घुश्मेश्वर, भीमेश्वर जगतार हरे,
काशीपति, श्रीविश्वनाथ जय, मंगलमय अघहार हरे,
नीलकण्ठ जय, भूतनाथ जय, मृत्युञ्जय अविकार हरे।
पार्वतीपति हर-हर शम्भो, पाहि-पाहि दातार हरे।।
जय महेश, जय जय भवेश, जय आदिदेव महादेव विभो,
किस मुख से हे गुणातीत प्रभु! तव अपार गुण वर्णन हो,
जय भवकारक, तारक, हारक पातक-दारक शिव शम्भो,
दीन दुःख हर, सर्व सुखकर, प्रेम सुधाधर दया करो,
पार लगा दो भव सागर से, बनकर कर्णाधार हरे।
पार्वतीपति हर-हर शम्भो, पाहि-पाहि दातार हरे।।
जय मन भावन, जय अति पावन, शोकनशावन,
विपद विदारन, अधम उबारन, सत्य सनातन शिव शम्भो,
सहज वचनहर जलजनयनवर धवलवरनतन शिव शम्भो,
मदनकदनकर पापहरन-हर, चरन-मनन, धन शिव शम्भो,
विवसन, विश्वरूप, प्रलयंकर, जग के मूलाधार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि-पाहि दातार हरे।।
भोलानाथ कृपालु दयामय, औढरदानी शिवयोगी,
सरल हृदय, अति करूणासागर, अकथ-कहानी शिवयोगी,
निमिष मात्र में देते हैं, नवनिधि मनमानी शिवयोगी,
भक्तों पर सर्वस्व लुटा कर, बने मसानी शिवयोगी,
स्वयम् अकिञ्चन, जनमनरंजन पर शिव परम उदार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि-पाहि दातार हरे।।

आशुतोष! इस मोहमयी निद्रा से मुझे जगा देना,
विषमवेदना, से विषयों की मायाधीश छुड़ा देना,
रूप सुधा की एक बूंद से जीवन मुक्त बना देना,
दिव्यज्ञानभण्डार युगलचरणों की लगन लगा देना,
एक बार इस मनमन्दिर में कीजे पद-संचार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि-पाहि दातार हरे।।
दानी हो, दो भिक्षा में अपनी अनपायनि भक्ति प्रभो,
शक्तिमान हो, दो अविचल निष्काम प्रेम की शक्ति प्रभो,
त्यागी हो, दो इस असार-संसार से पूर्ण विरक्ति प्रभो,
परमपिता हो, दो तुम अपने चरणों में अनुरक्ति प्रभो,
स्वामी हो निज सेवक की सुन लेना करुण पुकार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि-पाहि दातार हरे।।
तुम बिन व्याकुल हूँ प्राणेश्वर, आ जाओ भगवन्त हरे,
चरण शरण की बांह गहो, हे उमारमण प्रियकान्त हरे,
विरह व्यथित हूँ दीन दुःखी हूँ दीनदयालु अनन्त हरे,
आओ तुम मेरे हो जाओ, आ जाओ श्रीमन्त हरे,
मेरी इस दयनीय दशा पर कुछ तो करो विचार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि-पाहि दातार हरे।।

क्षमा प्रार्थना

प्रत्येक प्रकार की पूजा-उपासना के अनन्तर क्षमा-प्रार्थना की जाती है। क्षमा-प्रार्थना की संक्षिप्त स्तुति इस प्रकार है।

आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व मां महेश्वर।।
अन्यथा शरणम् नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारूण्यभावेन रक्षस्व पार्वती पते।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत् पूजितम् मयादेव परिपूर्ण तदस्तु में।।
यदक्षर पदंभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।

तत् सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद नन्दिकन्धर।।
कर चरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा,
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व।
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।

शिवजी की आरती

ॐ जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा।। ॐ हर हर हर महादेव।।
एकानन चतुरानन पंचानन राजै।
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजै।। ॐ हर हर हर महादेव।।
दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन मन मोहै।। ॐ हर हर हर महादेव।।
अक्षमाला बनमाला मुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद लेपन भाले शशीधारी।। ॐ हर हर हर महादेव।।
पार्वती पर्वत में विराजत शिवजी कैलाशा।
आक धतूर का भोजन भस्म में वासा।। ॐ हर हर हर महादेव।।
हाथों में कंगन कानों में कुण्डल गल मुण्डमाला।
जटा में गंग विराजे ओढ़े मृगछाला।। ॐ हर हर हर महादेव।।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे।। ॐ हर हर हर महादेव।।
कर मध्य कमण्डल चक्र त्रिशूलधारी।
जगकर्ता जगहर्ता जगपालनकारी।। ॐ हर हर हर महादेव।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव ध्यावत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका।। ॐ हर हर हर महादेव।।
काशी में विश्वनाथ विराजत नन्दी ब्रह्मचारी।
नित उठ भोग लगावत सब दिन दर्शन पावत महिमा अति भारी।। ॐ हर हर हर महादेव।
चौंसठ योगिनी मंगल गावत नृत्य करत भैरव।
बाजे ताल मृदंग शंख अरु घड़ियाला।। ॐ हर हर हर महादेव।।
गायत्री सावित्री श्री लक्ष्मी पारवती संगे।

❁❁❁❁❁❁